नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997) जनसंपर्क
विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305
इ-मेल: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट: www.hindivishwa.org

मोदी के प्रयास- सभ्यता और संस्कृति का शहर हुआ स्वच्छ: डॉ. कठेरिया

स्वच्छता के प्रति लोगों में बढ़ी जागरुकता- काशी का कायाकल्प

शोधपरक रिपोर्ट

डॉ. धरवेश कठेरिया के नेतृत्व में शोध

'पर्यावरण संरक्षण: स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण'
(एक कदम स्वच्छता की ओर: वाराणसी के विशेष संदर्भ में)
विषय पर हुआ शोध

- भारत में स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढ़ रही है।
- 91 प्रतिशत लोगों ने माना कि गांधी के सपनों को साकार कर रहा है स्वच्छ भारत अभियान।
- स्वच्छ भारत अभियान में जानी-मानी हस्तियों के जुड़ने से अभियान का प्रचार-प्रसार तेजी से हुआ।
- 86.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेत सामाजिक सहयोग बढा है।

डॉ. धरवेश कठेरिया
सहायक प्रोफेसर,
जनसंचार विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
E-mail:-
dkskatheriya@yahoo.com
Cell No.:- +91 9922704241

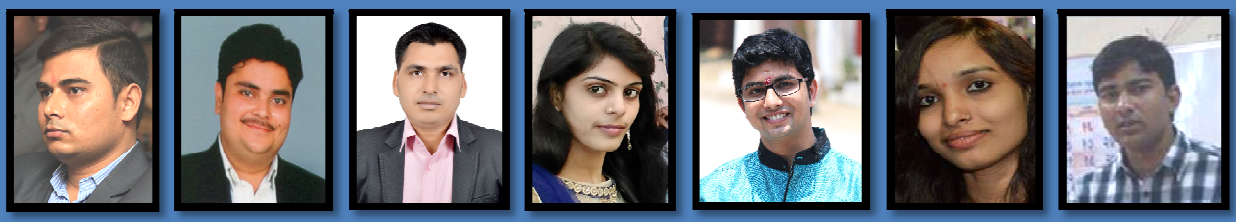

शोध अध्ययन में डॉ. कठेरिया के अलावा अन्य शोधार्थी बाएं से निरंजन कुमार, प्रणव मिश्र, नीरज कुमार सिंह, हिमानी सिंह अविनाश त्रिपाठी, पद्मा वर्मा और शैलेंद्र कुमार पाण्डेय।

स्वच्छता के प्रति जागरुक कर रहा स्वच्छ भारत अभियान

91 प्रतिशत लोगों ने माना कि गांधी के सपनों को साकार कर रहा स्वच्छ भारत अभियान

कहा जाता है कि जिस तरह से किसी व्यक्ति की पहचान उसके चेहरे, हाव-भाव, विचार आदि से होती है ठीक उसी तरह से हम सभी के आसपास के वातावरण की पहचान वहां की स्वच्छता देखकर की जाती है। किसी व्यक्ति को बनारस घूमना है तो सबसे ज्यादा कोई चीज प्रभावित करती है तो वह है शहर की स्वच्छता। वर्तमान सरकार के द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता अभियान का प्रभाव बनारस में भी देखने को मिलता है। शोध में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 79.5 प्रतिशत लोगों का मानना है कि यह अभियान लोगों को जागरुक करने में सफल रहा है। 91 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान गांधीजी के सपनों को साकार करने जैसा है। कुछ प्रतिभागी इस अभियान को राजनीति रूप से देखते हैं वहीं 74.25 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान से अपने आस-पास के वातावरण को साफ-सुथरा करने के उद्देश्य से जुड़े हैं। 86.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से सामाजिक सद्भाव के साथ-साथ स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ा है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि यह अभियान स्वच्छता के साथ-साथ, सामाजिक सद्भाव, लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देता है। उक्त बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. धरवेश कठेरिया के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण: स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओर: वाराणसी के विशेष संदर्भ में) विषय पर हुए शोध में सामने आयी।

भारत में स्वच्छता अभियान की शुरुआत महात्मा गांधी के द्वारा किया गया था। महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए 2 अक्टूबर 2014 को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की गई। इस अभियान के लिए प्रधानमंत्री ने प्रत्येक भारतीय को 100 घंटे प्रतिवर्ष समर्पित करने के लिए अनुरोध किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार साफ-सफाई न होने के कारण भारत में प्रति व्यक्ति औसतन 6500 रूपए जाया होता है। स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जो भारत सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य पूरे भारत को स्वच्छ रखना और स्वच्छता के प्रति आम नागरिकों को जागरूक करना है। यूपीए सरकार के द्वारा सन 1999 में निर्मल अभियान शुरू किया गया जो अपने लक्ष्य तक पहुंचने में असफल रहा।

शोध में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि वे स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। सबसे ज्यादा मत 36.25 प्रतिशत स्वच्छता के प्रति जागरुक करना, 30.75 प्रतिशत मत गांधी के विचारों को अमल करना, 24.25 प्रतिशत मत विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण और सबसे कम 8.75 प्रतिशत मत राजनीतिक लाभ के उद्देश्य से स्वच्छता अभियान को देखते हैं।

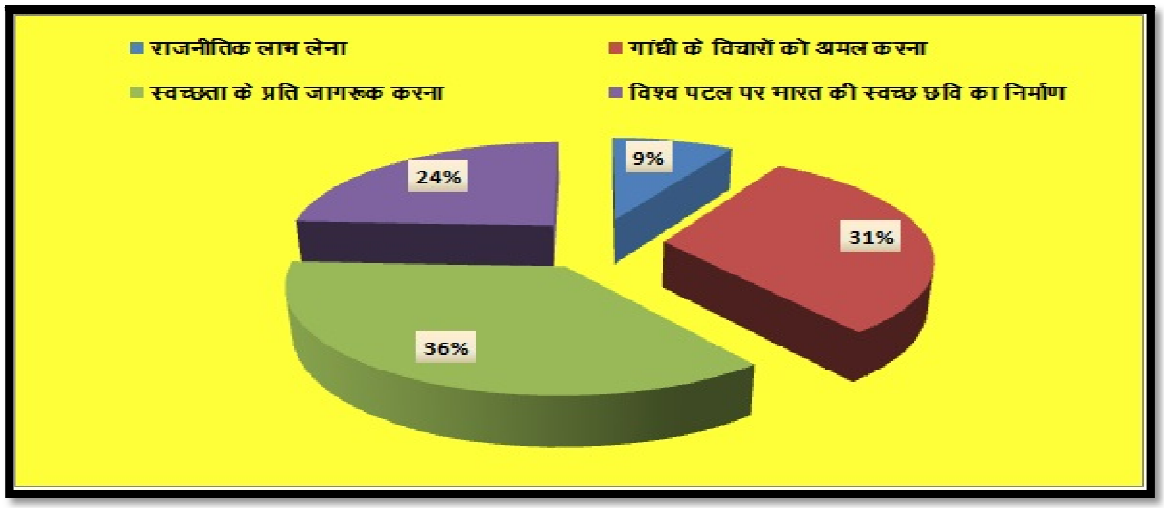

85 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में जानी-मानी हस्तियों के जुड़ने से अभियान का प्रचार-प्रसार तेजी से हुआ। 74.25 प्रतिशत प्रतिभागी आसपास के वातावरण को स्वच्छ करने, प्रचार-प्रसार के लिए 19.5 प्रतिशत, राजनीतिक कारणों से 2 प्रतिशत, छवि निर्माण हेतु 2.5 प्रतिशत एवं किसी के दवाब में आकर 1.75 प्रतिशत लोग इस अभियान से जुड़े हुए हैं। आंकड़े यह साबित करते हैं कि सबसे ज्यादा 74.25 प्रतिशत प्रतिभागी आस-पास के वातावरण को स्वच्छ करने के उद्देश्य से जुड़े हैं।

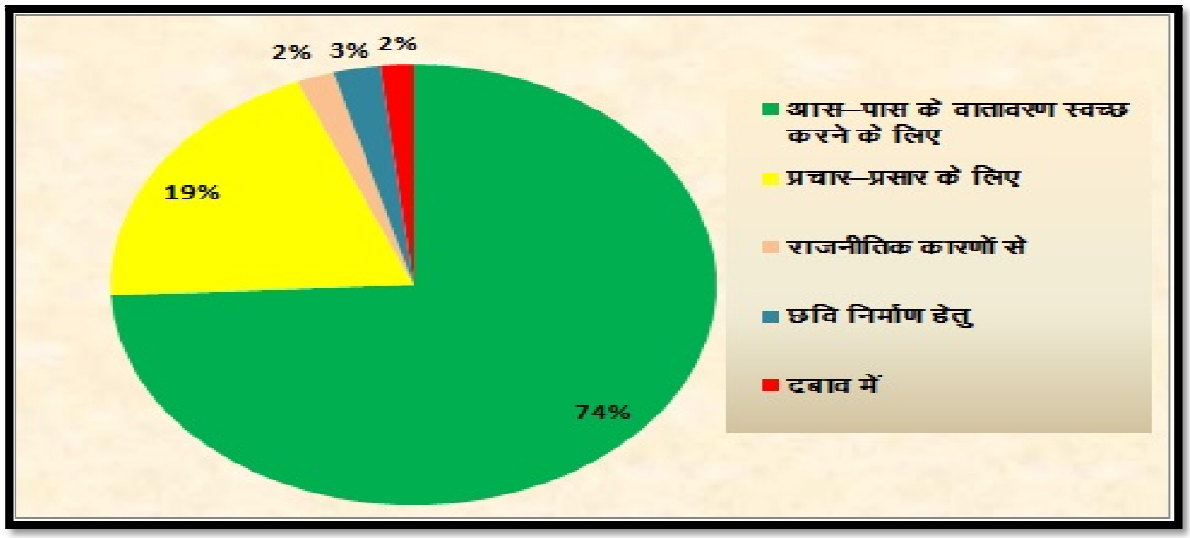

75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छता अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है। शोध का हवाला देते हुए डॉ. कठेरिया ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान देश का भविष्य है जिसके आईने में पूरा भारत स्वच्छ और निर्मल दिखाई दे रहा है। स्वच्छता अभियान निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए सरकार से ज्याद आमजन की जिम्मेदारी है। क्योंकि आमजन की स्वच्छता पर ही देश की स्वच्छता निर्भर है।

अध्ययन को स्वरूप देने के लिए निदर्शन सैंपल के माध्यम से वाराणसी शहर का चयन किया गया है। वाराणसी शहर के शहरी क्षेत्र में रह रहे निवासियों से प्रश्नावली के माध्यम से उनके राय और विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। तथ्य संकलन के लिए खुली और बंद प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न रखा गया है जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है। कुछ लोगों की शैक्षणिक आधार को देखते हुए प्रश्नावली भरने में हो रहे परेशानी के माध्यम से उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

73.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर देखने को मिला है वहीं 86.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ा है। आंकड़े यह साबित करते हैं कि स्वच्छता अभियान के बाद से लोगों में सामाजिक सौहार्द भी बढ़ रहा है। स्वच्छता अभियान में 62.5 प्रतिभागी 1 से 3 घंटा का समय प्रत्येक महीने देते हैं।

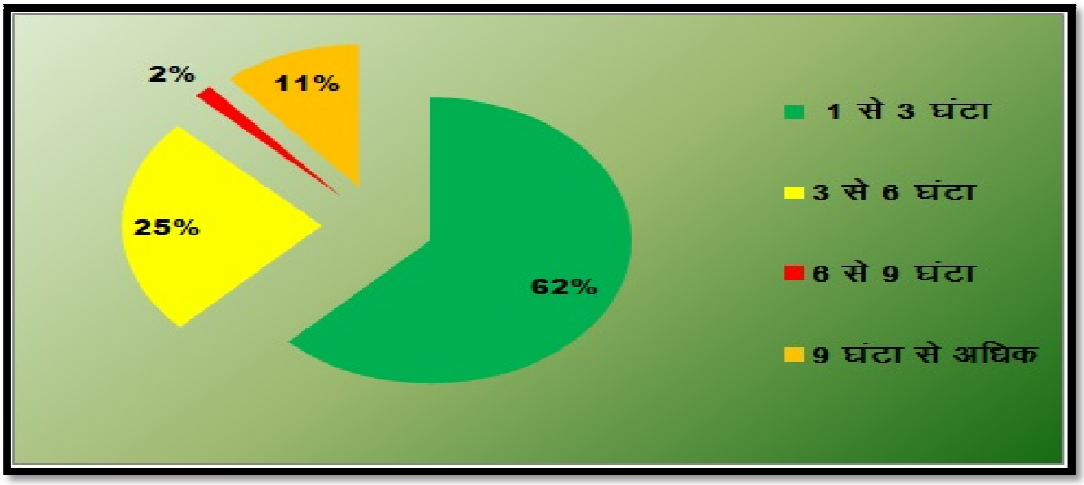

स्वच्छ भारत अभियान के बारे में ज्यादातर प्रतिभागियों ने विचार देते हुए कहा कि यह अभियान सफलता की सौगात लिख रहा है। कुछ समय पहले का बनारस और आज के बनारस में काफी अंतर देखने को मिल रहा है। प्रतिभागियों ने यह भी बताया कि स्वच्छता अभियान के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ी है। कुछ प्रतिभागियों ने मिली जुली प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह अभियान स्वच्छता को दिशा दे सकता है लेकिन इसकी पहुँच अभी गांवों तक नहीं हो पायी है अभी तक यह केवल शहरों तक ही सिमट कर रह गई है।

सुझाव

शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं-

- LoPNrk vfHk;ku dk fu;fer tkjh j[ku gr LFkkuh; Lrj ij ftEenkjh r; djuh gkxhA
- LoPNrk vfHk;ku d lkFk&lkFk ykxk e LoPNrk d ifr tkx#drk Qyk,A
- LoPNrk vfHk;ku l lcf/kr fu;ek dk 'kgj] xko d pkd&pkjkg ij yxokuk pkfg,A ftl ykxk e LoPNrk d ifr tkx#drk dk Hkko ink gkA
- LoPNrk vfHk;ku dk ipkj&ilkj jktuhfrd Lrj l Åij mBdj djuk gkxkA
- LoPNrk 0;fDrxr ugh lkekftd ftEenkjh g bld ek/;e l ykxk e lkekftd lkgkn fodflr djA

शोध अध्ययन में डॉ. कठेरिया के अलावा जनसंचार विभाग के पीएच. डी. शोधार्थी निरंजन कुमार, प्रणव मिश्र, आईसीएसएसआर परियोजना के पूर्व शोध सहायक नीरज कुमार सिंह एम. फिल. जनसंचार के हिमानी सिंह अविनाश त्रिपाठी, पद्मा वर्मा व एम. फिल. भाषा अध्ययन के शैलेंद्र कुमार पाण्डेय की भूमिका महत्वपूर्ण रही।